Research Scholar: **Shaheen Bano**

Supervisor: **Prof. Kahkashan Ahsan Saad**

Department: Hindi

Title: **Bhumandalikaran Aur Aadivasi Asmita Vimarsh Ka Vishleshan (Hindi Katha Sahitya ke Vishesh Sandarbh Mein)**

संक्षिप्त शोध–सार

आदिवासी समाज अनादिकाल से ही अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है जो अभी तक जारी है। भूमण्डलीकरण के दौर में आदिवासी समाज की अस्मिता खतरे में पड़ गयी है। वर्तमान व्यवस्था केवल विकास केनाम पर आदिवासी का शोषण कर रही है। आदिवासी समाज की स्थिति, उनकी समस्याओं पर जब भीबात की जाती है तो सबसे पहले इनकी अस्मिता का प्रश्न सामने आता है। जो इनके जल, जंगल, ज़मीन से जुड़ा हुआ है, यही इनकी मौलिक पहचान मानी जाती है जिसे मुख्यधारा का समाज खत्म करता जा रहा है।

अतः देखा जाए तो आज के समय का दौर 'अस्मिताओं' के उदय से परिपूर्ण है। जिसमें वैश्वीकरण, उत्तर–आधुनिकता एवं तकनीक के वर्चसव की प्रक्रिया के बीच 'अस्मिता विमर्श' एक महत्वपूर्ण प्रश्न बन गया है। आज अस्मिता का सवाल भूमण्डलीकरण को उसके वर्चस्व को चुनौती देता हुआ खड़ा है। 'अस्मिता विमर्श' हर दबे–कुचले वर्ग की उभरती हुई एक सशक्त आवाज है, जिसमें सबने अपनी पहचान को बचाने के लिए संघर्ष की आवाज उठाई है।

आदिवासी 'अस्मिता–विमर्श' आज़ादी के बाद से उठने वाला वहविचार है, जो मुख्यधारा के समाज में अपनी जगह बना चुका है। अस्मिता के प्रश्न को 'हरिराम मीणा', जोरामयालाम नाबाम, रूपलाल बेदिया, वंदना टेटे, अनुज–लोगुन, वाल्टर भेंगरा तरूण आदि विचारकों ने अपने कथा–साहित्य में उठाया है, जिसमें आदिवासी पात्र अपने समाज, अपनी संस्कृति को बचाने के लिए निरंतर संघर्षरत है। भूमण्डलीकरण और आदिवासी अस्मिता–विमर्श के दौर में अपनी अस्मिता को मुख्यधारा के समाज में जीवित रखते हुए कथा–साहित्य को एक नया आयाम दिया है, साथ ही हिन्दी भाषा को एक सशक्त माध्यम माना है अर्थात् आदिवासी कहानियों और उपन्यास के मूल बिन्दु में आदिवासी स्त्री–पुरूष की छवि अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत है।

आदिवासी समाज सबसे अलग एक ऐसा आदिम समुदाय है,जो अपनी परम्परागत मान्यताओं, रीति–रिवाजों को जिंदा रखे हुए है। आदिम समाज के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि यह समाज भाषा, बोली एवं जीवन–शैली में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यह समुदाय जंगलों, पर्वतों जैसे क्षेत्रों में अपना जीवन–यापन करते आए है, इनकी आजीविका का प्रमुख स्त्रोत कृषि है, लेकिन कभी–कभी इन्हें अन्य कार्य करके भी अपना जीवन–यापन करना पड़ता है। आदिवासी समाज की सबसे बड़ी समस्या जल, जगंल, ज़मीन और उनकी भावनाओं की है। जिस जमीन को साफ करके वह खेती करने लायक बनाते है, उससे उनका आत्मीय रिश्ता होता है तथा वह ज़मीन उनकी संस्कृति और पहचान का हिस्सा बन जाती है। आदिवासियों की अस्मिता का सवाल जहाँ उनकी जीवन–चर्या से संबंध रखता है तो वहीं उनकी सामाजिक–सरंचना और जीवन–यापक के साधन जल, जंगल, जमीन से जुड़ जाते है। इस प्रकार अस्मिता का उदय उनकी पहचान को परिलक्षित करता है, तो वहीं उनकी विरासत जैसे–भाषा, शिक्षा, संस्कृति, जीवन–शैली, उनकी पहचान को जिंदा रखती है।